

## Anekant Vyavastha Prakaranam Part 02

|             |   |
|-------------|---|
| Folder No.  | 022427                                  |
| Granth Name | Anekant Vyavastha Prakaranam Part<br>02 |
| Author      | Dakshvijay                              |
| Publisher   | Vijay Lavanyasurishwar Gyanmandir       |
| Edition     | 1                                       |
| Year        | 1958                                    |
| Pages       | 442                                     |

### अनेकान्तव्यवस्था प्रकरणम् भाग ०२

|              |                                  |
|--------------|----------------------------------|
| फोल्डर नं.   | ०२२४२७                           |
| ग्रन्थ       | अनेकान्तव्यवस्था प्रकरणम् भाग ०२ |
| लेखक         | दक्षविजय                         |
| प्रकाशक      | विजय लावण्यसूरिश्वर ज्ञानमंदिर   |
| आवृत्ति      | १                                |
| प्रकाशन वर्ष | १९५८                             |
| पृष्ठ        | ४४२                              |

#### मुख्य टाइटल

|  |     |
|--|-----|
| प्रस्तावना -----   | १   |
| विषयानुक्रमणिका -----  | १   |
| अथ ऋजुसूत्रनयविचार -----   | १   |
| निरुक्तितो लक्षणमृजुसूत्रस्य ज्ञानगतं वस्तुगतञ्चावक्रत्वमृजुस्वमुद्भावितम् -----                 | १   |
| सविकल्पकस्य निर्विकल्पकस्य च प्रत्यभिज्ञानस्य प्रामाण्यं भावितम् -----                           | ११  |
| क्षणिकत्वस्य प्रत्यक्षेणाग्रहात् साध्य-साधनयोरविनाभावग्रहो न सम्भवतीति... -----                  | २१  |
| अस्य प्रतिविधानं क्षणिकवादिनः तत्र सामग्र्याः कार्यजनकत्वप्रवाद... -----                         | ३६  |
| क्षणिकपक्षेऽनष्टात् कारणात् कार्यजन्मोपपादनम्... -----   | ४३  |
| समारोपव्यवच्छेदकतया तस्य पराभिप्रेतप्रामाण्यस्या निरास -----                                     | ५१  |
| पूर्वदृष्टं पश्यामीति व्यवसायबलान्निर्विकल्पदर्शनस्य पूर्वापरैकत्वग्राहित्वाभ्युपगमोऽपि... ----- | ६१  |
| निर्विकल्पक-सविकल्पकप्रत्यभिज्ञानयोः प्रामाण्यासिद्धेर्न... -----                                | ७१  |
| विरोधिनमपेक्ष्य भावो निवर्त्तत इति कदाचित्को विनाश इत्यत्र.. -----                               | ८१  |
| प्रत्यभिज्ञाने इन्द्रियजत्वार्थजत्वैकावभासित्वादेर्व्यवस्थापनम् -----                            | ९१  |
| ऊहाख्यप्रमाणमेव सर्वोपसंहारेण व्याप्तिग्राहकं जैनाभ्युपगतमास्थेयमित्युपसंहृतम् -----             | १०१ |
| कुर्वद्रूपत्वेनैव हेतुत्वं कारणत्वेनैव कार्योत्पत्तिव्याप्यत्वमित्यस्य निराकरणम् -----           | १११ |
| घटप्रच्युते कपालस्वरूपत्वे कुत क्षणिकत्वमिति बौद्धमतखण्डनसमाप्ति-----                            | १२७ |
| सर्वधर्मविरहशून्यतेत्यभ्युपगमपरः शुद्धतरपर्यायास्तिकावलम्बि ऋजुसूत्रं इति कल्पान्तरम् -----      | १३७ |
| अथ शब्दनयनिरूपणम् -----  | १३९ |
| व्युत्पत्तिविशेषतः शब्दशब्दं निरुच्य... -----  | १३९ |
| शब्दनयमतम् -----   | १५२ |
| कारकादिभेदेनानेकार्थाभ्युपगन्तृत्वं शब्दस्य भावितम् -----  | १६० |
| अथ समभिरूढनयनिरूपणम् -----   | १६३ |

|  |     |
|--|-----|
| एकामेव संज्ञां समभिरोहतीति समभिरूढ इति व्युत्पत्तौ...  | १६३ |
| शब्दनयानां किं प्रमाणं प्रस्थकादि किं वा न प्रमाणमित्यत्र दभिमतं...                              | १७३ |
| एतन्नये परगतस्य दानहरणादेर्नास्त्येव सद्भाव...   | १८३ |
| अथ एवम्भूतनयविचार  | १८४ |
| पदार्थव्युत्पत्तिनिमित्तक्रियाकालव्यापकपदार्थसत्ताभ्युपगमपर एवम्भूतः...                          | १८४ |
| सिद्धान्ते आदिदेशना व्यवहाराश्रितैव...   | १९४ |
| शब्दादिनयत्रयविचारसमर्थनावेदकं ग्रन्थकर्तृपद्यम्   | २०३ |
| अथ सप्तनयविचार   | २०३ |
| एते च नया प्रत्यक्षादिस्थले परस्परसापेक्षा...  | २०३ |
| सर्वं सर्वात्मकमिति साङ्ख्यमतखण्डनार्थकत्वेन सार्थको द्वितीयभङ्ग इति कल्पान्तरम्                 | २१३ |
| असन्दुतरूपा सत्त्वादयोर्थान्तरं निजं सन्दुतरूपं...   | २२४ |
| स्यादस्ति नास्ति च घट इति चतुर्थभङ्गस्य प्रथमविकलादेशस्योपपादिका..                               | २३५ |
| स्यादवक्तव्य एव घट इति तृतीयभङ्गस्य...   | २४७ |
| सदृशव्यञ्जनपर्याय <sup>2</sup> रेव सर्वमस्तीत्युपसंहार...  | २६० |
| गुणशब्दमन्तरेणापि पर्यायविशेषसंख्यावाचकं...  | २७२ |
| नयोपनयभेदानां यथासम्भवं योजनम्   | २९१ |
| गुणविकारत्वं पञ्चवा विकल्प्य दूषइतम्   | ३०४ |
| उक्तगाथार्थदाढ्यार्था सीसमयिविष्कारण इति सम्मतिगाथा तद्गाथ्या च                                  | ३१८ |
| दहनाद्दहन पचनात् पचन इत्यत्राप्यनेकान्ते विरोधाद्दहना...   | ३३४ |
| अनेकान्ततत्त्वविदुषस्तदाज्ञापरस्य वा महाव्रताधारिणश्चारित्र...                                   | ३४२ |
| अथानेकान्तवादप्रशस्ति  | ३४३ |
| अन्ते अनेकान्तवादस्य सर्ववादोत्कृष्टस्य नमस्कृतिरूपमङ्गला वेदकं पक्षम् तद्गाथ्यानश्च             | ३४३ |
| तत्त्वबोधिनीविवृतिकृतानेकान्तव्यवस्थाप्रकरणस्य सम्पूर्णस्य सर्वेपि विषया...                      | ३५३ |
| अथ टीकाकारप्रशस्ति   | ३७७ |
| तत्त्वबोधिनीविवृतिकृता स्वगुरुप्रवरेभ्यो नेमिसूरीश्वरेभ्योर्पितेयं तत्त्वबोधिनीविवृतिस्तदीक्षिता |     |
| भवत्वित्यार्शंसनम्   | ३७७ |
| तत्त्वबोधिनीविवृतिकृतिकालनिर्णय-   | ३७८ |